SOCIAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part-III
Paper-V
By-Dr. Ramendra Kumar Singh.
Deptt of Psy.
D.K. College, Dumraon
VKSU, Ara

PUBLIC OPENION

जनमत एक सामान्य शब्द है, जिसका प्रयोग प्राय: लोगों द्वारा किया किया जाता है। प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली वाले देशों में इसका विशेष महत्व है। साधारण अर्थ में जनमत से तात्पर्य जनता के मत से है। लेकिन सभी मतों को हम जनमत नहीं कह सकते, केवल ऐसे मतों को जनमत कहेंगे जिसका सम्बन्ध किसी विवादग्रस्त समस्या या विषय होता है। इसकी परिभाषा मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने ढंग से दी है। यहाँ पर हम एक दो परिभाषाओं का विश्लेषण करेंगे जो इसकी विशेषताओं एवं स्वरूप पर अधिक से अधिक प्रकाश डालते हैं -

किम्बल यंग के शब्दों में :-

"Public openion consists of the openion held by the public at a certain time."

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि किम्बल यंग ने जनमत किसी खास समय में जनता द्वारा व्यक्त व्यक्त मत है। अर्थात विशेष समय में जन द्वारा धारण किया गया मत ही जनमत है। इसी तरह चैपलिन ने इसका बड़ा ही सुन्दर परिभाषा दी है।-

"जनमत का तात्पर्य विशिष्ट समस्या पर जनसंख्या के अधिकांश सदस्यों के मत या मनोवृति से है।"

उपर्युक्त दोनों परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर जनमत का जो स्वरूप

उभरता है उसे निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है :-

(1) जनमत का अर्थ समूह के अधिकांश सदस्यों का किसी विवादग्रस्त विषय पर व्यक्त विचार या मत है।

(2) जनमत सामान्यतः राष्ट्र, समाज या समुदाय के महत्व पर बनता है।

(3) जनमत एक सामाजिक या सामूहिक निर्णय होता है।

(4) जनमत का सम्बन्ध एक समय विशेष से होता है।

(5) जिस विषय पर आज जनमत है, उस पर कल जनमत नहीं भी बन सकता है।

(6) जनमत के लिये यह भी आवश्यक है कि अधिकांश सदस्य उस समस्या विशेष के प्रति सजग या जागरूक हों।

(7) जनमत गत्यात्मक (Dynamic) स्वरूप के होता है जो बदलते रहता है

(8) जनमत में प्रायः बहुमत का बोध होता है।

जनमत की विशेषताएँ

उपरोक्त विश्लेषण से जनमत की कुछ विशेषताएँ उभर कर आती हैं जो निम्नलिखित हैं :-

(i) **विवादग्रस्त विषय** :- जनमत की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उसका सम्बन्ध विवादग्रस्त विषय से है। ऐसे विषयों पर समाधान नहीं निकलने पर जनमत द्वारा निर्णय निकाला जाता है।

(ii) **बहुमत** :- जनमत में किसी विषय पर अधिकांश लोगों का विचार या निर्णय होता है।

(iii) **विवेकशीलता** :- विवेकपूर्ण सार्वजनिक विवेचन के बाद ही जनमत बनता है (P. V. Young)

(iv) **सामूहिक व्यवहार** :- जनमत एक तरह का सामूहिक व्यवहार होता है।

(v) **गत्यात्मक** :- जनमत Dynamic होता है। आज किसी विषय पर जनमत है तो कल नहीं भी हो सकता है।

(vi) **विकासात्मक प्रक्रिया** :- जनमत एक विकासात्मक प्रक्रिया है।

जनमत निर्माण

प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली में जनमत निर्माण को बहुत ही अधिक महत्व दिया जाता है। किसी भी राष्ट्र के अंतर्गत कारित राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक घटनाएँ जनमत निर्माण या बदलाव की संभावनाएँ बढ़ा देती हैं। जनमत निर्माण से तात्पर्य किसी विशेष मुद्दे पर आम जनता को विचार या निर्णय देने के लिये तैयार करना होता है। यह निर्णय पक्ष, विपक्ष या बदलाव के लिये होता है। इसकी चार अवस्थाएँ होती हैं: (i) समस्या की उत्पत्ति (ii) समस्या पर विचार विमर्श करना (iii) वैकल्पिक समाधानों को प्रस्तुत करना (iv) अंत में जनमत को प्रकट करना।

जनमत के कई निर्धारक होते हैं:-

(i) नेतृत्व:- जनतांत्रिक व्यवस्था में जनमत निर्माण में leadership की भूमिका बड़ा ही महत्वपूर्ण होती है। समूह का केन्द्रबिन्दु नेता होता है जिसका समूह के अन्य सदस्यों से तथाकथित होता है। नेता समूह की आवश्यकता, सुरक्षा, प्रतिष्ठा, आदि के हिसाब से लोगों में विश्वास प्रकट करता है और इसके लिये जो निर्णय लेता है उसपर जनमत बनाता है।

(ii) सामाजिक मानदंड एवं मूल्य:- प्रत्येक समाज की अपनी मूल्य विश्वास एवं मानदंड होते हैं। समाज के लोगों में किसी विषय पर मत बनाने में उस समाज के आदर्शों एवं विश्वास का महत्वपूर्ण हाथ होता है। सामाजिक आदर्श का पालन अनिवार्य होता है यदि उसमें बदलाव लाना होता है तो जनमत को बदलाव के पक्ष में करना होता है। जैसे प्रायः सभी समाज में गर्भपात को पाप माना जाता है लेकिन बढ़ती हुई आबादी एवं उसके दुष्परिणामों को देखते हुए उसे पर जनता को विश्वास में लिया जाता फिर तैयार करना। आज प्रायः सभी लोग इसे अपनाने लगे लेकिन जबरदस्ती नसबन्दी के चलते इन्दिरा गांधी की सरकार के खिलाफ जनमत निर्माण हो गया और सरकार को जाना पड़ा था।

(iii) सामाजिक वर्ग: जनमत निर्माण में या परिवर्तन में समाज के विभिन्न

तरह की सामाजिक संस्थाएँ एवं वर्गों जैसे श्रमिक वर्ग/संस्थाएँ, व्यवसायिक वर्ग, शैक्षणिक संस्थाएँ, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं का हाथ होता है। इस तरह प्रत्येक वर्ग तथा संस्थाओं का अपना अपना प्रभाव होता है जो उन्हें किसी विशेष मुद्दे पर अपना मत निर्धारित करते हैं और खास तरह के जनमत के पक्ष में निर्णय लेते हैं।

कुछ विशेष घटनाएँ एवं उनकी व्याख्या :- Kimball young (1960) का कहना है कि जनमत निर्माण में कुछ घटित घटनाएँ बड़ा ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जैसे राजनीतिक हत्याएँ, चारित्रिक घटनाएँ लूटमार आदि का तत्काल प्रभाव पड़ता है। 1975 की आपातकाल की घोषणा एवं घटित घटनाएँ इन्दिरा गाँधी के खिलाफ चली गई।

पूर्वधारणाएँ एवं रूढ़ियुक्तियाँ : जनमत निर्माण में पूर्वधारणाओं विश्वासों एवं रूढ़ियुक्तियों का भी महत्वपूर्ण हाथ होता है। जिस व्यक्ति का किसी के प्रति नकारात्मक पूर्वाग्रह होता है उसका मत उसके विरुद्ध बनता है। प्रायः यह देखने को मिलता है कि कुछ समस्या के प्रति आम जनता पहले से ही धारणा पाल बैठी है, एक तरह की स्थिर आकृति (stereotype) हो जाता है। फलतः सामूहिक रूप से समस्या के पक्ष या विपक्ष में अपना जनमत बना लेते हैं।

व्यक्तिगत कारक : जनमत निर्माण में व्यक्तिगत कारकों की भी अपनी भूमिका होती है। यह Internal factor होता है जो जनमत को प्रभावित करता है और पक्ष या विपक्ष में जाने के लिए प्रेरित करता है।

प्रचार माध्यम

जनमत निर्माण में प्रचार माध्यमों की अपनी विशेष भूमिका होती है। प्रचार माध्यम का जनता से सीधा सम्पर्क होता है और अपनी विचार से जनता को अवगत करता है। आजकल तो Media और विशेष भूमिका में है। सभी लोगों Connectivity है इसका बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ता है। प्रमुख प्रचार माध्यम निम्न हैं-

(1) समाचार पत्र :- जनमत निर्माण का सशक्त माध्यम समाचार पत्र है। सम्पादकीय, विज्ञापन, लेख, आर्टिकल के माध्यम से जनता से सीधे जोड़ते हैं। सुदूर क्षेत्र में घटित घटनाओं से अवगत कराते हैं। अभी हाल में घटित घटनाएँ कश्मीर से धारा 370 की समापन में

प्रचार माध्यमों की भूमिका बड़ा ही सराहनीय रही है। समाचार पत्र दूर दूर ग्रामीण क्षेत्रों में मत परिवर्तन कराने में भूमिका निभाए सकते हैं।

(ii) रेडियो:- रेडियो भी जनमत संग्रह एवं निर्माण का एक बड़ा ही सशक्त माध्यम है। इसके माध्यम से किसी घटना का प्रसार विश्व के सभी कोने में आसानी से फैलाया जा सकता है। इसके माध्यम से प्रसारित एवं प्रसारित वाद विवाद का लाभ अनपढ़ जनता भी उठाती है। यह अखबारों की तुलना में अधिक विश्वसनीय है।

(iii) टेलिविजन:- आधुनिक युग में टेलिविजन भी एक सशक्त माध्यम बन गया है। इसका एक लाभ यह भी है कि इसमें दृश्य एवं श्रव्य (Audio-visual) दोनो तरीका से लोगों से सम्पर्क स्थापित हो जाता है। इससे जनमत निर्माण बड़ा ही तेजी से होता है। इसके द्वारा प्रसारित वाद विवाद जनता के मस्तिष्क पर गहरा छाप छोड़ता है।

(iv) पुस्तक एवं पत्रिकाएँ:- जनमत निर्माण में पुस्तक एवं पत्रिकाओं की भी अपनी भूमिका है। इसके माध्यम से जनता तक अपनी विचार और बातें पहुँचायी जाती हैं। इसके माध्यम से सरकार की नीतियों की आलोचनाएँ भी की जाती हैं। यह जनमत निर्माण में समाचार पत्रों की तुलना में अधिक सशक्त है।

(v) सार्वजनिक भाषण:- सार्वजनिक भाषण का बहुत ही महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसके द्वारा जनता से सीधे जुड़ने का मौका मिलता है। नेता जनता को सम्बोधित कर अपनी विचार लोगों तक पहुँचाता है श्रोता सामने होता है तथा प्रभावित होता है। इसमें नेता की आवाज, भाषण शैली, Body language आदि जनता को आकर्षित करती है और जनमत निर्माण हो जाता है।

(v) सोशल मिडिया:- आधुनिक युग में जनमत निर्माण का सबसे सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा जन-जन तक अपनी बातों, विचारों को पहुँचाना आसान है। व्हाट्स एप्प, इन्स्टाग्राम, ऑनलाइन संवाद, मोबाइल, फेसबुक आदि आधुनिक युग के जनमत निर्माण के चमत्कारिक औजार हैं जो जन जन से सम्पर्क स्थापित कर देते हैं

सिनेमा :- सिनेमा चलचित्र के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सरोकार की मुद्दों से जनता को परिचित करना एक बड़ा ही जनमत संग्रह एवं निर्माण का जरिया रहीका है। फिल्म डिविजन छोटी-छोटी फिल्में बनाकर सरकार से जनता को जोड़ती है। विडियो फिल्में काफी प्रचलित हो रही है। जीत संवाद, अभिनय आदि द्वारा जनता को सरकार की खुबियों एवं खामियों से जोड़ा जाता है। इसके माध्यम से जनमत निर्माण बड़ा ही प्रभावी ढंग से हो जाता है।

पोस्टर/लिफलेट :- इसके माध्यम से जनता तक पहुँचा जा सकता है। अपनी विचारों को लिखकर आकर्षक भाषा एवं मुद्रा में प्रस्तुत कर लोगों तक पहुँच बनाया जाता है। सरकार महामारियों से बचाव, परिवार नियोजन के लिए तथा, प्रदूषण, स्वच्छता, नशामुक्ति के खिलाफ जनमत संग्रह में इसका इस्तेमाल करती है। होर्डिंग्स, दीवाल पेंट आदि दूसरा उदाहरण है।

शिक्षण संस्थाएँ :- शिक्षण संस्थाएँ जनमत निर्माण की बड़ा ही सशक्त माध्यम है। सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना को जगाने में बड़ा ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन संस्थाओं द्वारा किया गया विचारविमर्श बड़ा ही प्रभावकारी एवं गहरा प्रभाव छोड़ता है। जनमत निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम है।

इस प्रकार उपर्युक्त आधार पर यह कहना बड़ा ही महत्व रखता है कि आधुनिक युग में जनमत जनतंत्र का आधारशीला है जिसके माध्यम से किसी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय समस्या के प्रति जनता को अवगत कराया जाता है तथा जनता अपना मत निर्धारित करती है। जनमत निर्माण में कई कारकों की भूमिका होती है जिनमें से कुछ प्रमुख की चर्चा ऊपर की गई है।